भारत-मंथन-शृंखला

भारतीय संस्कृति

(भूत-वर्तमान-भविष्य)

सम्पादक

डॉ. मोनिका पुरी सेठी

डॉ. विकास शर्मा

मूलचन्द्र सिंह

भारतीय संस्कृति : भूत-वर्तमान-भविष्य

aph

इन्द्रप्रस्थ अध्ययन केन्द्र

श्रीराम कुटीर, ए-1/7 द्वितीय तल, चाणक्य प्लेस

पंखा रोड, नई दिल्ली-110059

दूरभाष : 98111149925, 9211794944

ई-मेल : ipakendra@gmail.com

Price : 220.00

ISBN : 978-93-86817-50-1

9 789386 817501

Alankar Publishing House

1/9929, West Gorakh Park

Gali No. 3H, Shahdara, Delhi -110032

Mobile : 9810429755 / 9999163460

E-mail : alankar_books07@yahoo.com

Branch:

H.No.11, Baikhunthapur, Lalmati

Guwahati-781029 (Assam)

अध्याय-27

भविष्य का भारत आर्थिक विकास-2050

-डॉ. राजेश कुमार

परिचय

मानव जीवन में अर्थव्यवस्था के महत्व से हम सभी भलीभांति परिचित हैं। किसी भी देश के लिए उसकी अर्थव्यवस्था सबसे महत्वपूर्ण होती है और इसी के बल पर वह विश्व में अपना स्थान निर्धारित करता है। जो देश अर्थव्यवस्था में सर्वोपरि होता है वही पूरी दुनिया को मार्गदर्शन प्रदान करता है और पूरी दुनिया उस देश का लोहा मानती है।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में धन को जीवन के सर्वोत्तम संसाधन बताया गया है जिन्हें मनुष्य को हर कण संग्रह के लिए तत्पर रहना चाहिए।

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्॥

क्षण-क्षण विद्या के लिए और कण-कण धन के लिए प्रयत्न करना चाहिए। समय नष्ट करने पर विद्या और साधनों के नष्ट करने पर धन कैसे प्राप्त हो सकता है।

करीब ढाई हजार वर्ष पूर्व भारत भूमि पर महान राजनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्री विष्णु गुप्त, चाणक्य अथवा कौटिल्य अवतरित हुए थे और इस राजनैतिक चातुर्य

* फॉर स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, नई दिल्ली

के धनी ने विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ अर्थशास्त्र की रचना की थी जिसमें राजा के कर्तव्यों का, आर्थिक तंत्र के विकास का, प्रभावी शासन एवं दण्ड व्यवस्था आदि का विवरण दिया है। इस ग्रंथ के माध्यम से चाणक्य ने शासन की समस्त राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, न्यायिक, इत्यादि गतिविधियों को निर्धारित किया था यानि अर्थ अथवा धन को सबका मूल केंद्र माना था।

यह सर्वविदित है कि वर्तमान भारत एक विकासशील देश है और हमारी अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जहाँ सार्वजनिक क्षेत्र निजी क्षेत्र के साथ सह-अस्तित्व में है।

भारत व्यापारिक दृष्टि से एक आकर्षक देश है और इसकी अर्थव्यवस्था के कुछ तुलनात्मक एवं सकारात्मक पहलू हैं जैसे कि अमेरिका की तुलना में भारत में रहना बहुत सस्ता है। चीन या ब्राजील के मुकाबले इसकी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद बेहतर है। क्योंकि भारतीय कामगारों को उतनी आमदनी की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सब कुछ कम खर्च में हो जाता है। भारत में बड़ी तादात में सुशिक्षित प्रौद्योगिकी कर्मचारी हैं। अंग्रेजी भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक है। लगभग सभी सुशिक्षित कहे जाने वाले भारतीय इसे बोलते हैं। यह शिक्षा के उच्चस्तर के साथ-साथ प्रौद्योगिकी और बहुत सारे दूसरे व्यवयासों को आकर्षित करता है। भारतीय कर्मचारी विभिन्न आर्थिक, भाषायी, क्षेत्रीय, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की एक विस्तृत श्रृंखला से आते हैं। यह विविधता एकता के लिए चुनौती हो सकती है। सामाजिक आर्थिक स्थिति काफी हद तक भूगोल से निर्धारित होती है। भारत के अलग-अलग वर्ग और क्षेत्रों के लोग हर वर्ष गांव से शहरों में रहने के लिए आते हैं। उनमें से ज्यादातर युवा और शिक्षार्थी वर्ग हैं। जो धन उपार्जन के माध्यम से उच्चगुणवत्ता का जीवन चाहते हैं।

अनुसंधान क्रिया विधि

इस लेख का उद्देश्य भारत के आर्थिक विकास पर चर्चा करना है। आर्थिक विकास का विश्लेषण करने के लिए हमने आई.एम.एफ. (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष), और सीआईए (केंद्रीय खुफिया एजेंसी-अमेरिका) वर्ल्ड फैक्टबुक, इत्यादि से आर्थिक डेटा एकत्र किया है।

आईएमएफ 189 देशों का एक वैश्विक संगठन है, जो वैश्विक मौद्रिक सहयोग को बढ़ावा देने, वित्तीय स्थिरता को सुरक्षित करने, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुविधाजनक बनाने, उच्च रोजगार और सतत् आर्थिक विकास को बढ़ावा

देने और दुनिया भर में गरीबी को कम करने के लिए काम कर रहा है। 1945 में बनाया गया, आई.एम.एफ. उन 189 देशों द्वारा शासित और जवाबदेह है जो इसकी निकट-वैश्विक सदस्यता बनाते हैं।

आई.एम.एफ. का प्राथमिक उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित करना है विनिमय दरों और अंतर्राष्ट्रीय भुगतान की प्रणाली जो देशों (और उनके नागरिकों) को एक दूसरे के साथ लेन-देन करने में सक्षम बनाती है। फंड के अधिदेश को 2012 में वैश्विक स्थिरता पर आधारित सभी व्यापक आर्थिक और वित्तीय क्षेत्रों के मुद्दों को शामिल करने के लिए अद्यतन किया गया था। (IMF, 2019)[1]

सीआईए वर्ल्ड फैक्टबुक 267 विश्व संस्थाओं के लिए इतिहास, सरकार, अर्थव्यवस्था, भूगोल, संचार, परिवहन, सैन्य और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर जानकारी प्रदान करता है। यह एक स्वतंत्र एजेंसी है जो वरिष्ठ अमेरिकी नीति निर्माताओं को राष्ट्रीय सुरक्षा खुफिया जानकारी प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। (CIA World Factbook, 2019)[2]

भारत की आर्थिक समीक्षा

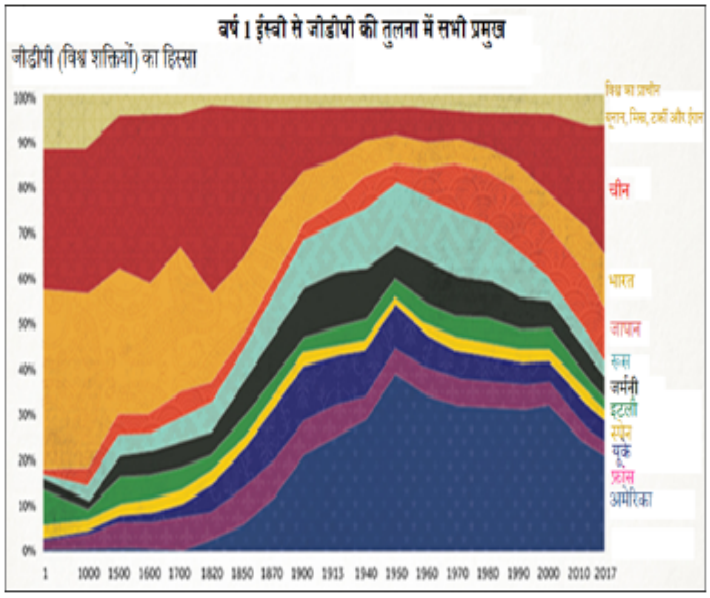

जेफ डेसजार्डिन, विजुअल कैपिटलिस्ट जो एक डिजिटल मीडिया के एडिटर-इन-चीफ हैं, यहां व्यापार निवेश पर आकृति बनाते हैं, इन्होंने दुनिया के 2000 वर्षों के आर्थिक इतिहास नामक एक आकृति सितंबर 8, 2017 तैयार किया, जिसमें उन्होंने विश्व की प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था को रेखांकित किया है।

आकृति 1: 2000 वर्षों की वैश्विक आर्थिक समय रेखा

जिसमें भारत को वर्ष 1 ईस्वी से लगभग 1700 वर्षों की निरंतर अवधि में सबसे अधिक जीडीपी लगभग 35% से 40% के साथ सम्पूर्ण विश्व में उच्चतम अर्थव्यवस्था वाला देश दिखाया गया है। उनके द्वारा बनाई गयी आकृति 1 और 2 प्रस्तुत हैं जिनका स्रोत विश्व जनसंख्या पर सांख्यिकी: जीडीपी, और प्रति व्यक्ति जीडीपी, 1-2008 ईस्वी, एंगस मैडिसन अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष है। (Jeff Desjardins] 2019)[3]

आकृति 2: विश्व में भारत की आर्थिक भागीदारी

स्रोत- आकृति 1 एवं 2: https://www-visualcapitalist-com/2000 & years &economic&history&one&chartè

भारत की अर्थव्यवस्था एक विकसित मिश्रित अर्थव्यवस्था है। (Ganguly,

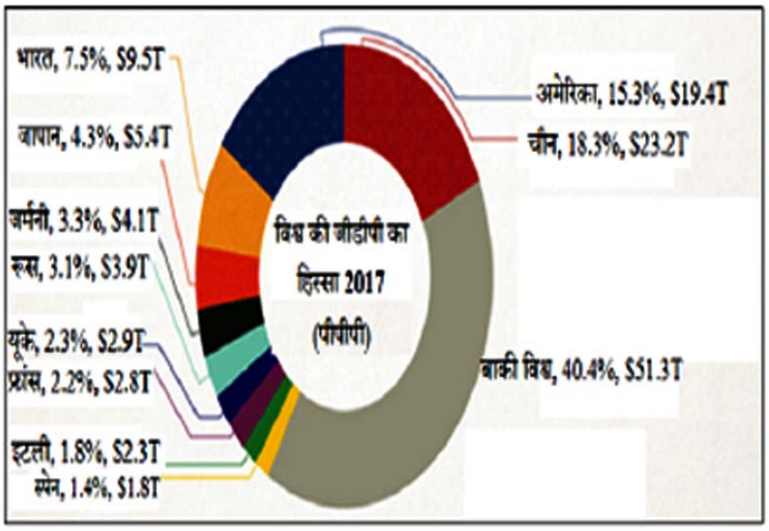

Sumit, 2011)[4] यह नाममात्र जीडीपी (सकल घरेलु उत्पाद) के आधार पर दुनिया की सातवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) के आधार पर तीसरी सबसे बड़ी है। यहाँ यह भी जानना जरुरी है कि देश के घरेलू बाजार का आंकलन करते समय पीपीपी- जीडीपी का उपयोग नाममात्र जीडीपी की तुलना में अधिक उपयुक्त और उपयोगी होता है।

पीपीपी आधारित जीडीपी अंतर्राष्ट्रीय बाजार विनिमय दरों का उपयोग करने के बजाय देश की स्थानीय वस्तुओं, सेवाओं और मुद्रा स्फीति की दरों के सापेक्ष लागत को ध्यान में रखता है, जो प्रतिव्यक्ति आय में वास्तविक अंतर को विकृत कर सकता है। हालांकि, कभी-कभी यह सीमित होता है जब देशों के बीच वित्तीय प्रवाह को मापते हैं और जब काउंटर के बीच समान वस्तुओं की गुणवत्ता की तुलना करते हैं पीपीपी का उपयोग अक्सर वैश्विक गरीबी सीमा को मापने के लिए किया जाता है और इसका उपयोग संयुक्त राष्ट्र (संयुक्त राष्ट्र) द्वारा एचडीआई (मानव संसाधन सूचकांक) का आंकलन करने में किया जाता है।

भारत ने 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद से सालाना औसतन 6-7% जीडीपी वृद्धि हासिल की। 2014 के बाद से जिसमें 2017 के अपवाद को छोड़ दें तो भारत की अर्थव्यवस्था चीन से आगे निकल कर दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था रही है। (World Economic Outlook October 2018)[5] निवेश दरों और वैश्विक अर्थव्यवस्था में बढ़ते एकीकरण के कारण सकारात्मक है। (CIA World Factbook, 2019)[6] भारत की अर्थव्यवस्था के सबसे सकारात्मक पहलू हैं भारत की अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर न्यूनतम निर्भरता, भारत की युवा आबादी, यहाँ के लोगों की वैश्विक प्रगाढ़ता, अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं पर दक्षता और स्वस्थ बचत की रूढ़िवादी परम्परा। और ये सब गुण किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के आधार स्तम्भ होते हैं ये सब गुण भारत को चीन के ऊपर ही नहीं रखते है बल्कि बाकि देशों के लिए भी भारत एक मिसाल है। वित्तीय वर्ष 2015-16 में पहली बार विश्व बैंक के विकास के दृष्टिकोण में भारत शीर्ष पर रहा, इस दौरान अर्थव्यवस्था 7.5% रही। (Emily Schneider, 2015)[7]. भारत 2001 के बाद 9% से अधिक वार्षिक वृद्धिदर के साथ दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ते सेवा क्षेत्रों में से एक है, जिसने 2012-13 में सकल घरेलू उत्पाद का 57% योगदान दिया। (Bhargava,Yuthika, 2016)[8] भारत वित्त वर्ष 2017 में $ 154 बिलियन के राजस्व के साथ आईटी सेवाओं, बिजनेस

प्रोसेस आउट सोर्सिंग (BPO) सेवाओं और सॉफ्टवेयर सेवाओं का एक प्रमुख निर्यातक बन गया है। (NASSCOM, 2017)[9] आईटी उद्योग अर्थव्यवस्था का सबसे तेजी से बढ़ने वाला हिस्सा है। जोकि भारत में सबसे बड़ा निजी क्षेत्र का नियोक्ता भी है। (Menezes, Beryl, 2015)[10] भारत 2018-19 में 3,100 से अधिक प्रौद्योगिकी स्टार्ट-अप के साथ दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा केन्द्र स्टार्ट-अप हब बन गया है। (Press Trust of India, 2015)[11] भारतीय खुदरा उद्योग सबसे अधिक गतिशील और तेज-तर्रार उद्योगों में से एक के रूप में उभरा है। 2017 में कुल खपत व्यय लगभग US $ 3,824 बिलियन से 2020 तक लगभग 3,600 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 10 प्रतिशत और लगभग 8 प्रतिशत है। (India Brand Equity Foundation, 2018)[12]

तालिका-1: विश्वकी 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की सूची अपने शीर्ष स्तर पर जीडीपी- 2019.

Lrj	n'k	eY;*	Åpkbl वर्ष	n'k	eY;*	Åpkbl वर्ष
	विश्व	88081126	2019	विश्व	143089492	2019
1.	अमेरिका	21482409	2019	चीन	27449046	2019
2.	चीन	14172199	2019	अमेरिका	21482409	2019
3.	जापान	6203213	2012	भारत	` 11412971	2019
4.	जर्मनी	4117069	2019	जापान	5806720	2019
5.	यूके	3085300	2007	जर्मनी	4555467	2019
6.	भारत	2957720	2019	रूस	4345361	2019
7.	फ्रांस	2932215	2008	इंडोनेशिया	3753201	2019
8.	ब्राजिल	2613993	2011	ब्राजिल	3524064	2019
9.	इटली	2402062	2008	यूके	3144548	2019
10.	रूस	2297125	2013	फ्रांस	3080998	2019

स्रोतःअन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, अक्टूबर 2015; मूल्य* रकम लाखों अमेरिकी डोलर में

तालिका -2: विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की सूची जीडीपी (नाममात्र) के आधार पर 1980 से 2020 तक (अनुमानित]

स्तर	1980	1985	1990	1995	2000	2005	2010	2015	2020
1.	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका
2.	सोवियत संघ	सोवियत संघ	जपान	जापान	जापान	जापान	चीन	चीन	चीन
3.	जपान	जपान	सोवियत संघ	जर्मनी	जर्मनी	जर्मनी	जापान	जापान	जापान
4.	प. जर्मनी	प. जर्मनी	प.जर्मनी	फ्रांस	यूके	यूके	जर्मनी	जर्मनी	जर्मनी
5.	फ्रांस	फ्रांस	फ्रांस	यूके	फ्रांस	चीन	यूके	यूके	**भारत**
6.	यूके	यूके	यूके	इटली	इटली	फ्रांस	फ्रांस	फ्रांस	यूके
7.	इटली	इटली	इटली	ब्राजिल	चीन	इटली	इटली	ब्राजिल	फ्रांस
8.	चीन	कनाडा	कनाडा	चीन	ब्राजिल	कनाडा	ब्राजिल	इटली	ब्राजिल
9.	कनाडा	चीन	ईरान	स्पेन	कनाडा	स्पेन	रूस	रूस	इटली
10.	मेक्सिको	भारत	स्पेन	कनाडा	मेक्सिको	सकोरिय	भारत	भारत	रूस
11.	स्पेन	ब्राजिल	ब्राजिल	ईरान	स्पेन	ब्राजिल	स्पेन	कनाडा	कनाडा
12.	ब्राजील	मेक्सिको	चीन	सकोरिय	सकोरिय	मेक्सिको	कनाडा	स्पेन	सकोरिय
13.	भारत	ऑस्ट्रेलिया	भारत	मेक्सिको	ईरान	भारत	ऑस्ट्रेलिया	ऑस्ट्रेलिया	स्पेन
14.	नीदरलैंड	स्पेन	ऑस्ट्रेलिया	नीदरलैंड	भारत	रूस	सकोरिया	सकोरिया	ऑस्ट्रेलिया
15.	ऑस्ट्रेलिया	ईरान	नीदरलैंड	ऑस्ट्रेलिया	नीदरलैंड	ऑस्ट्रेलिया	मेक्सिको	मेक्सिको	मेक्सिको
16.	सऊदी अरब	नीदरलैंड	मेक्सिको	भारत	रूस	नीदरलैंड	नीदरलैंड	नीदरलैंड	इंडोनेशिया

स्रोत: अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, अक्टूबर 2015

उपरोक्त तालिका में आईएमएफ ने 2019 के अनुसार भारत की नाममात्र (Nominal) जीडीपी के आधार पर छठे स्थान पर रखा है। जबकि क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) जीडीपी के आधार पर तीसरे स्थान पर जो कि सर्वज्ञात है कि नाममात्र जीडीपी के मुकाबले क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) जीडीपी ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह तथ्य स्थापित करता है कि भारत की अर्थव्यवथा विश्व में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

निम्नलिखित तालिका-2 एवं 3 नाममात्र जीडीपी एवं क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) जीडीपी क्रमशः के आधार पर भारत का मूल्यांकन करती है। इन दोनों तालिकाओं में 1980 से 2020 तक भारत का संभावित स्थान निर्धारित करती है। निम्नलिखित तालिका विशिष्ट वर्ष के रूप में नाम मात्र जीडीपी द्वारा सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों की सूची है।

उपरोक्त तालिका ये दर्शाती है कि भारत लगातार अपनी अर्थव्यवस्था सदृढ़ करता चला आ रहा है जोकि 1980 के 13वें स्थान से 2020 में 5वें स्थान पर पहुंच रहा है। भारत 1995 में न्यूनतम प्रदर्शन के बावजूद नाम मात्र जीडीपी के आधार पर भी दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। और निश्चित तौर पर विश्व में 5वाँ स्थान एक सम्मान का विषय है।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष और सीआईए वर्ल्डफैक्टबुक के अनुसार विशिष्ट वर्ष के रूप में पीपीपी (क्रय शक्ति समता) के आधार पर सकल घरेलू उत्पाद/ जीडीपी के आधार पर सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की सूची निम्न है।

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) जीडीपी के आधार पर भारत की अर्थव्यवथा 1980 से 1990 के अर्ध-दशक तक अपने न्यूनतम स्तर पर रही है। परन्तु 1995 से लगातार सुधार के साथ 2015 में विश्व में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है और इसी गति से वह 2020 में भी अपना स्थान बरकरार रख रही है।

तालिका -3ः विश्व की सब से बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की सूची जीडीपी- पीपीपी (क्रय शक्ति समता) के आधार पर 1980 से 2020 तक (अनुमानितऋ

स्तर	1980	1985	1990	1995	2000	2005	2010	2015	2020
1.	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	अमेरिका	चीन	चीन
2.	सोवियत संघ	सोवियत संघ	जपान	जापान	चीन	चीन	चीन	अमेरिका	अमेरिका
3.	जपान	जपान	प. जर्मनी	चीन	जापान	जापान	भारत	भारत	**भारत**
4.	इटली	प. जर्मनी	सोवियत संघ	जर्मनी	जर्मनी	भारत	जापान	जापान	जपान
5.	प. जर्मनी	इटली	इटली	रूस	भारत	जर्मनी	रूस	रूस	जर्मनी
6.	फ्रांस	फ्रांस	फ्रांस	भारत	रूस	रूस	जर्मनी	जर्मनी	रूस
7.	ब्राजील	ब्राजील	चीन	इटली	फ्रांस	ब्राजिल	ब्राजील	ब्राजील	इंडोनेशिया
8.	यूके	यूके	यूके	फ्रांस	इटली	फ्रांस	फ्रांस	इंडोनेशिया	ब्राजिल
9.	मैक्सिको	चीन	ब्राजील	ब्राजील	ब्राजील	यूके	यूके	यूके	यूके
10.	भारत	भारत	भारत	यूके	यूके	इटली	इटली	फ्रांस	फ्रांस

स्रोतः तालिका –2 और 3–अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, अक्टूबर 2015

आकृति 3: जीडीपी-पीपीपी पर आधारित
विश्व अर्थव्यवस्था 2018

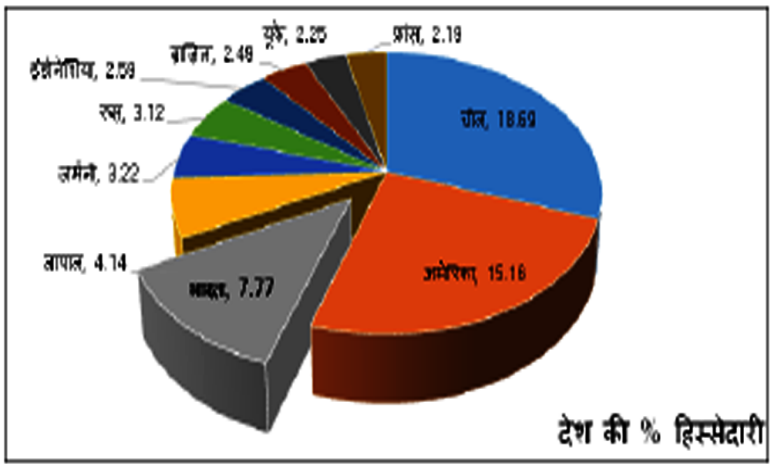

स्रोत: https://www-imf-org//xternal/datamapper/PPPSH@WEOèOEMDC/ADVEC/WEOWORLD

भारत 7.77% हिस्सेदारी की साथ तीसरे स्थान पर बरकरार है चीन और अमेरिका से काफी पीछे है लेकिन बाकि देशों से भी काफी आगे है। रूस जोकि 2016 में दस देशों की सूची में शामिल नहीं था वह अचानक विकास करते हुए 2018 में छठे स्थान पर आ गया है इसलिए भारत को बाकी के देशों से भी सतर्क रहने की आवश्यकता होगी।

आकृति 4: विश्व के प्रमुख देशों की जीडीपी (पीपीपी)
के आधार पर अनुमानित वार्षिक औसत विकासदर (%)

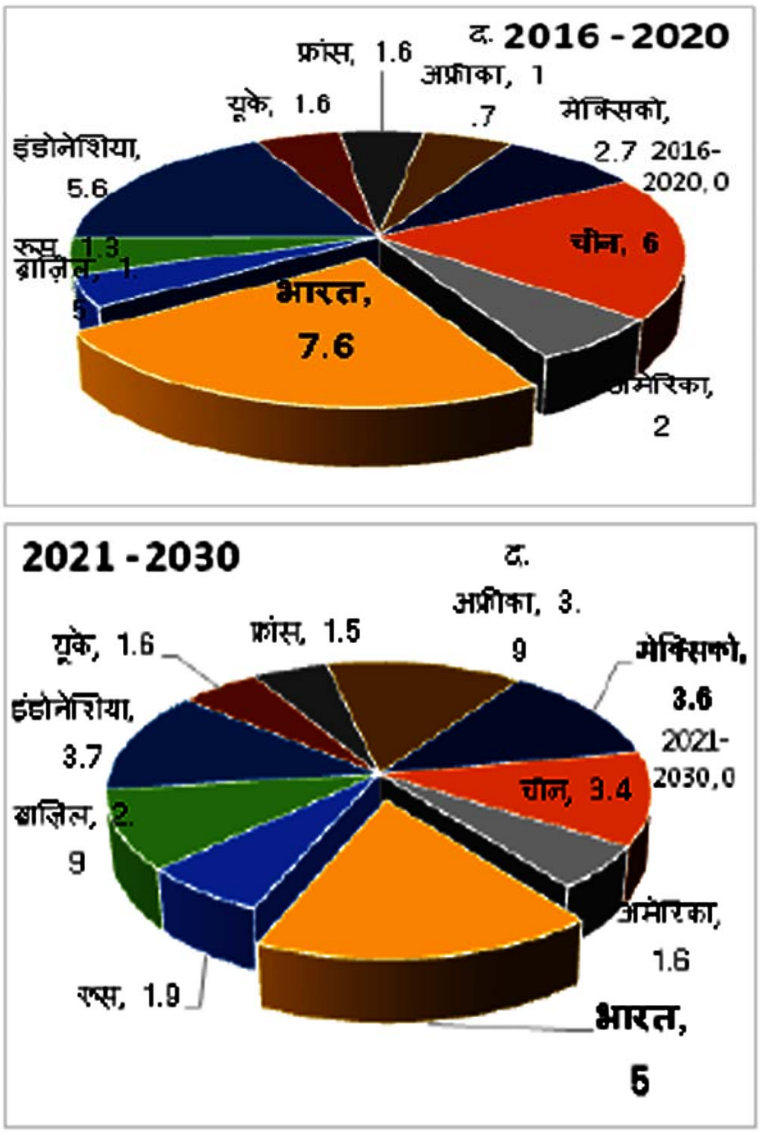

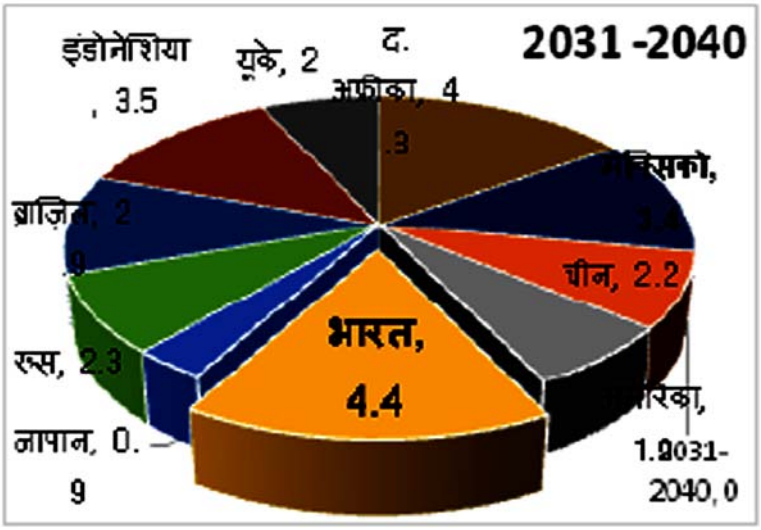

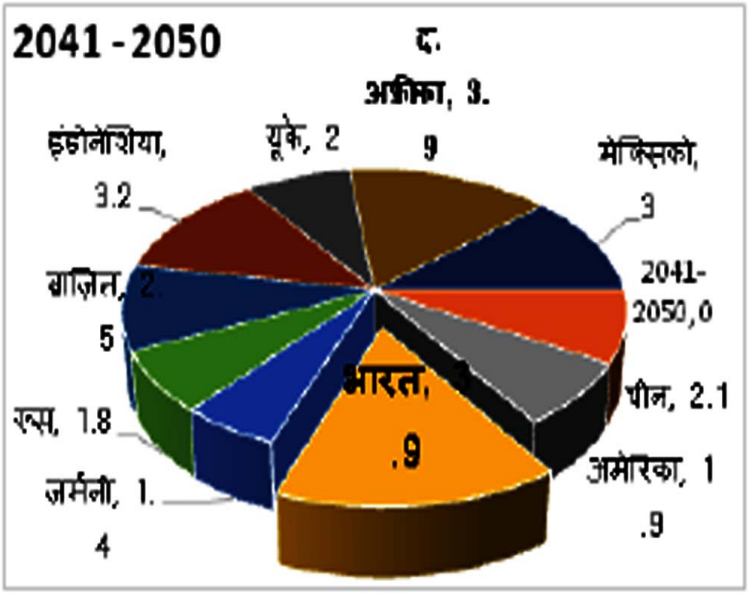

स्रोतः PricewaterhouseCoopers, The World in 2050 - Summary report: The Long View How will the global economic order change by 2050\ Feb] 2017- https://www-pwc-com/gx/enèissues/economy/the&world & in &2050- html#data

उपरोक्त आकृति में विश्व के प्रमुख देशों की जीडीपी (पीपीपी) के आधार पर चार दशकों का अनुमानित वार्षिक औसत विकास दर (%) को तुलनात्मक दर्शाया गया है। अगर हम इसमें सभी देशों की विकास दर पर नजर डालें तो भारत विश्व में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहा है। लेकिन प्रथम दशक से भारत की विकास दर का % कम होता जा रहा है और अंतिम दशक में भारत और दक्षिण अफ्रीका की विकास दर समान हो गयी है। दूसरी तरफ रूस, ब्राजील, यूके, मैक्सिको और जर्मनी की विकास दर प्रथम दशक से चौथे दशक आते-आते बढ़ गई है। इसलिए भारत को इन प्रतिस्पर्धी देशों को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए।

आकृति 5: दुनिया की शीर्ष 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं जीडीपी (पीपीपी) के आधार पर 2016 से 2050 तक (2020 से 2050 तक अनुमानित) (अमेरिका $ ट्रिलियन)

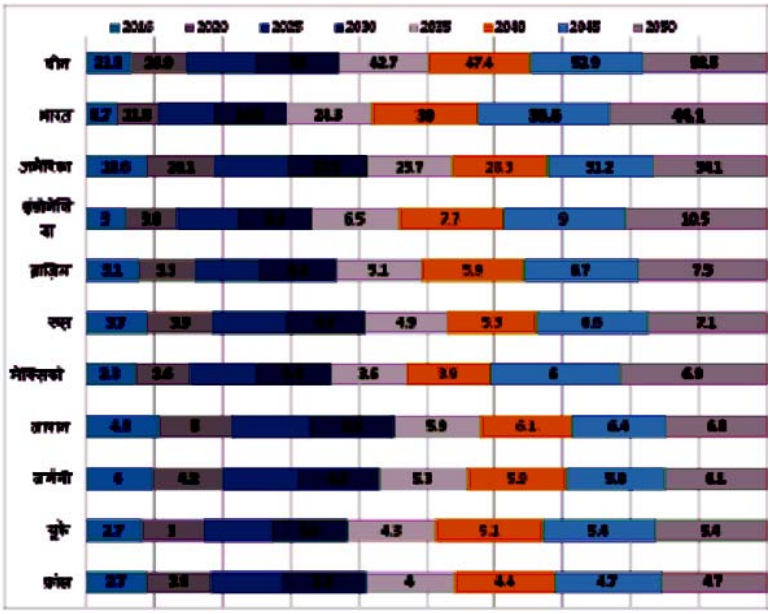

स्रोत: PricewaterhouseCoopers] The World in 2050 - Summary report: The Long View How will the global economic order change by 2050\ Feb] 2017- https://www-pwc-com/gx/en/issues/economyèthe& world &in &2050-html#data

दुनिया की शीर्ष 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं जीडीपी (नाममात्र) के आधार पर भारत 2016 में 7वें पायदान पर है लेकिन 2030 और 2050 में भारत तीसरे पायदान पर पहुंचने का अनुमान है। लेकिन जीडीपी (पीपीपी) के आधार पर भारत 2016 में तीसरे पायदान पर है और 2030 में भी तीसरे पायदान पर बरकरार है परन्तु 2050 में भारत विश्व की शीर्ष 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थओं में दूसरे पायदान पर पहुंचने का अनुमान है। लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि रूस 2016 में विश्व की शीर्ष 10 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थओं में स्थान नहीं बना पाया वो 2050 में छठे पायदान की दावेदारी पेश कर रहा है। इसलिए भारत को उभरती हुई अन्य अर्थव्यवस्थओं को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए।

(Price water house Coopers, 2017)[13]

उपरोक्त आकृति के आधार पर यह कहा जा सकता है कि चीन और भारत आने वाले समय में अमेरिका और यूरोप को लगातार पीछे छोड़ते चले जायेंगे। वैश्विक आर्थिक शक्ति G7 से E7 अर्थव्यवस्थाओं में स्थानांतरित हो जाएगी। G 7 (Group-7) में सम्मलित देश है यूएस, यूके, फ्रांस, जर्मनी, जापान, कनाडा और इटली। E7 (Emerging-7) में सम्मलित देश है चीन, भारत, इंडोनेशिया, ब्राजील, रूस, मैक्सिको और तुर्की।

जैसाकि उपरोक्त आकृति दर्शाती है 2035 तक अमेरिका भारत से आगे रहेगा परन्तु 2040 में भारत अमेरिका से आगे निकल जायेगा। अगर दोनों देशों की जीडीपी के अंतर को थोड़ा ध्यान से देखें तो ऐसा लगता है कि भारत 2037 के आस-पास अमेरिका को पीछे छोड़कर उससे आगे निकल जायेगा।

परिणामस्वरूप, 2050 में चीन और भारत की अगुवाई में दुनिया की सात सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से छह उभरती अर्थव्यवस्थाओं का अनुमान है। इस बीच, विश्व जीडीपी का यूरोपीय संघ का हिस्सा 2050 तक 10% से भी कम हो सकता है, जो कि भारत की जीडीपी से भी छोटा होगा।

भारत की चुनौतियाँ और सकारात्मक पक्ष

अमेरिका एक लंबे समय के लिए दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रहा है, लेकिन बदलते वैश्विक परिदृश्य में चीन, भारत और अन्य उभरते बाजारों में तेजी से बदलाव आया है। वैश्विक निवेशक भी इन वैश्विक परिवर्तनो का संज्ञान लेते हुए इन नई उभरती हुई आर्थिक महाशक्तियों का रुख करेंगे और इन देशों

में निवेश कर इनकी अर्थव्यवस्था को और गति देंगे। लेकिन ये सब इतना आसान नहीं है। समय-समय पर शीर्ष आर्थिक महाशक्तियों की नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था को चोट पहुंचाई है। जैसे कि अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने अपना मात्रात्मक आसान कार्यक्रम शुरू किया, तो कम ब्याज दरों ने डॉलर के मूल्य को मजबूत किया। इससे भारत के रुपये का मूल्य गिर गया। परिणामस्वरूप भारत के केंद्रीय बैंक को अपनी ब्याज दरें बढ़ाने के लिए मजबूर किया। परिणामस्वरूप इस तरह की कार्यवाहियों से भारत की आर्थिक वृद्धि धीमी पड़ जाती है। अपने आर्थिक स्वार्थ के लिए विकसित देश समय-समय पर विकासशील देशों पर कुठाराघात करते रहते हैं। इसके अलावा भी विकसित देश विकासशील देशों को तरह-तरह के मायाजाल में फँसाते रहते हैं। जैसे कि उनके प्राकृतिक संसाधनों पर कुटिलनजर रखना, उभरते हुए देशों में विभिन्न प्रकार की बनावटी प्रतिस्पर्धा और युद्ध की स्थिति बना देना, उनको युद्ध के दल-दल में छोड़ देना, और फिर उनको अपनी शर्तो पर और मनमानी कीमत पर युद्ध के हथियार बेचना।

इस अच्छे प्रदर्शन के बावजूद, भारत को सुधार गति और संशोधन क्षेत्रों को बनाए रखने की आवश्यकता है प्रतिकूल वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद, भारत में नीति-निर्माताओं को विवेकपूर्ण वृहद आर्थिक प्रबंधन पर एक प्रीमियम (अधिदेय) लगाना जारी रखना चाहिए, जिसमें राजकोषीय और मौद्रिक अनुशासन को बनाए रखना भी शामिल है। जिन नीतियों ने इसकी प्रतिस्पर्धा को बेहतर बनाने में मदद की है, उन्हें बनाए रखना चाहिए। इसमें सुधार शामिल हैं जो प्रशासनिक तंत्र में आगे की गतिशीलता को और ऊर्जा देने में मदद करेंगे।

वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए भारत को क्या करना चाहिए इस पर जरूर विचार विमर्श होना चाहिए। भारत को प्रशासनिक प्रक्रिया, निजीकरण, मानव संकल्प में निवेश, महत्व और सदुपयोग, कौशल विकास और कल्याण, कृषि विकास और प्रबंधन, नदियों का एकीकरण और पानी का समुचित प्रबंधन, बेहतर बुनियादी ढांचा, दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्ति, वैश्विक लुभावनी आर्थिक उदार शक्ति, क्षेत्रीय विकास एवं राज्यों का सहयोग और पर्यावरण ह्रास एवं जलवायु परिवर्तन के संबंध में चयनात्मकता के दृष्टिकोण के साथ ही एक समुचित निर्धारित नीति को अपनाना चाहिए।

भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व की महाशक्ति बनाने के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार है।

1. **दृढ़ राजनीतिक इच्छा शक्तिः** अगर भारत को सचमुच 2050 तक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनना है। तो उसे दृढ़ राजनितिक इच्छा शक्ति का प्रदर्शन करना ही होगा क्योंकि भारत एक लोकतान्त्रिक प्रणाली वाला देश है और विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत के बारे में कहा जाता है कि यहाँ पर कोई भी निर्णय कभी भी राजनीतिक कारणों से बदला जा सकता है। इस छवि को बदलना होगा। हमें चीन की तरह कठोर निर्णय लेने होंगे। भारत को 2050 तक की आर्थिक योजना बनानी होगी। इस योजना का सख्ती से पालन करना होगा। भारत लोकतान्त्रिक देश ही नहीं बल्कि एक उदार लोकतान्त्रिक देश है और यहाँ हमेशा ही कोई ना कोई किसी ना किसी स्तर पर आम चुनाव होते ही रहते हैं। फिर भी समग्र निवेश सुधार के लिए माहौल बनाए रखना बहुत जरूरी होगा। इसके अलावा भारत को बहुत सारे सख्त फैसले लेने होंगे जैसे कि भारत को अपने पैसों की निकासी एवं बर्बादी रोकनी होगी। सभी तरह की सब्सिडी बंद करनी होगी, मृत योजनाएं बंद करनी होंगी, बिना काम के पैसा बंद करना ही होगा क्योंकि ये सभी देश के विकास में अति बाधक हैं ओर कार्मिकों को नाकारा बनातीं है। देश में निराशा फैलाती हैं हर देश विकास से विनाश के तरफ बढ़ता है। ऐसी नीतियाँ लागू करनी होंगी जिससे देश व्यापारीकरण की ओर अग्रसर हो सके।
2. **प्रशासनिक प्रक्रियाः** एक जीवंत नवाचार और उद्यमशीलता पारिस्थिति की तंत्र के बावजूद, भारत का निजी क्षेत्र अभी भी भारी प्रशासनिक प्रक्रियाओं से बोझिल है। आर्थिक सुधारों को केवल नौकरशाही या राजनीतिक व्यवस्था पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए, बल्कि यह समाज के चार स्तंभो जैसे बुद्धिजीवियों, व्यापारियों, नौकरशाही और राजनेताओं की संयुक्त जिम्मेदारी होनी चाहिए। किसी व्यवसाय को शुरू करने के लिए आवश्यक समय और लागत दोनों को सही आंकलन के बाद कम से कम सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। जो नए व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं उनके लिए प्रशासनिक कार्यवाही में आधे दिन से ज्यादा का समय नहीं लगना चाहिए। भारत ने अभी एक साहसिक और अभिनव कदम उठाया है। जिसका नाम है 'इन्वेस्ट इंडिया,' इसका प्रमुख उद्देश्य है विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ावा देने के लिए एक स्टॉपशॉप, जिस

से प्रशासनिक कार्यों को कारगर और सुगम बनाया जा सके और विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश करने में आसानी हो सके। इसके आलावा घरेलू निवेशकों के लिए भी नियामक ढांचे को आसान बनाया जा सके। वर्तमान में 3 करोड़ से अधिक मामले भारत की अदालतों में लंबित हैं और इसके लिए भारत की नौकरशाही और अधिकारियों की लाल फीताशाही को पूरी तरह दोषी ठहराया जाता रहा है। यह जरुरी है की आज की अर्थव्यवस्था की बढ़ती जटिलता को कम करने के लिए कुछ ऐसे उदार कानून बनाये जाएँ जिससे अर्थव्यवस्था में बाधा ना आये और व्यापारी वर्ग को पुलिस, अदालत और वकीलों के चक्कर में ना पड़ना पड़े। लेकिन धोखाधड़ी, गबन और जानबूझकर आर्थिक अपराधी बने लोगों को माफ भी नहीं करना चाहिए। वैश्विक परिदृश्य में भारत की छवि लोकतांत्रिक, उदार, सहज, सुलभ और सुव्यवस्थित व्यापारिक देश की होनी आवश्यक है। इस संबंध में समेकित प्रयासों की आवश्यकता है ताकि भारत उभरते हुए प्रतिस्पर्धी माहौल का पूरा लाभ उठा सके।

3. **बेहतर बुनियादी ढांचा:** भारत सरकार खासकर पिछले पांच साल से आक्रामक रूप से बुनियादी ढांचे पर केंद्रित रही है-भौतिक और डिजिटल दोनों। सरकार को सड़क, रेलवे, बंदरगाह, स्वास्थ्य सेवाएं और नागरिक उड्डयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं पर खर्च करना चाहिए। जितनी बेहतर सड़कें, रेलवे, बंदरगाह, और नागरिक उड्डयन की व्यवस्थाएं होंगी उतनी बेहतर उत्पादों की आवा-जाही होगी और उतना व्यापार बेहतर होगा। जितना हमारे कामगारों का स्वास्थ्य ज्यादा बेहतर होगा उतना उत्पादन कर पाएँगे इसलिए हमें स्वास्थ्य देखभाल पर समुचित खर्च करना चाहिए। भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 1% सार्वजनिक स्वास्थ्य पर खर्च करता है, जब कि चीन में 3% और अमेरिका में 8.3% है। हमें स्वास्थ्य सेवा एवं देखभाल प्रणाली को सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। हमें भौतिक बुनियादी ढांचे के साथ -साथ डिजिटल बुनियादी ढांचे की भी उतनी ही जरूरत है। सरकार डिजिटल इंडिया पहल के अनुरूप, बुनियादी डिजिटल ढांचे को विकसित कर रही है। वर्तमान सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि नागरिकों को स्कूल पाठ्यक्रम और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम

से इंटरनेट (अन्तरजाल) के उपयोग में प्रशिक्षित किया जाए। नीति आयोग के अनुसार, कुछ 69% भारतीय अन्तरजाल का उपयोग नहीं करते हैं क्योंकि वे इसे समझ नहीं पाते हैं।

4. **मानव संकल्प में निवेश, कौशल विकास और कल्याण :** रूस, चीन और भारत अपनी बड़ी आबादी के कारण 19वीं सदी के मध्य से पहले दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थे। उन दिनों में, उत्पादकता के बजाय आर्थिक उत्पादन जनसंख्या का एक कार्य था। 2000 के दशक की शुरुआत में डॉट-कॉम उछाल के बाद संयुक्त राज्य में उत्पादकता चरम पर थी और पिछले एक दशक में इसमें गिरावट आई है। इसी समय, वैश्वीकरण ने दुनिया भर में प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण में तेजी लाई है। इन रुझानों से पता चलता है कि नवाचार के बजाय जनसंख्या, एक बार फिर से आर्थिक विकास का एक प्रमुख चालक बन जाएगी। चीन और भारत एक बार फिर आने वाले वर्षों में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएंगे।

   भारत को अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करते हुए अपने घरेलू विषयों पर भी उतना ही ध्यान लगाना होगा। सभी को यह अच्छी तरह से पता है कि जनसंख्या परिस्थितियों के आधार पर देश की आर्थिक वृद्धि को सकारात्मक या नकारात्मक रूप में प्रभावित करती है। यह सुनिश्चित है कि ज्यादा आबादी देश की आर्थिक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। जैसे कि एक किसान के पास जितने ज्यादा बच्चे होते हैं उसका मतलब उसके उतने अधिक श्रमिक। आखिरकार, आपके पास जितने अधिक लोग हैं, उतना ही अधिक काम किया जाता है, और जितना अधिक काम किया जाता है, उतना ही अधिक धन कमाया जा सकता है। लेकिन इसके लिए मानव शक्ति का रचनात्मक एवं उचित उपयोग करना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। अगर कोई देश अपनी जनसंख्या को जितना अच्छे ढंग से इस्तेमाल करता है आप निश्चित मानिए कि वह देश अपनी प्रगति को सुनिश्चित करता है और भारत को यह सुनिश्चित करना ही होगा। लेकिन अगर भारत अपनी मानव शक्ति का समुचित उपयोग नहीं कर पाता है तो वह खुद भारत के लिए भस्मासुर साबित हो सकती है। चीन ने जो आर्थिक प्रगति की है वह मानव शक्ति के बल पर ही की

है। इसलिए भारत को चीन के उत्पादन प्रक्रिया की बारीकियों को समझना चाहिए जिस तरीके से उन्होंने ज्यादा आबादी को अपने देश की आर्थिक विकास के लिए उपयोगी बनाया उससे सीख लेकर हमें भी सुनिश्चित करना चाहिए की हम अपनी आबादी को कैसे ज्यादा से ज्यादा उत्पादन में लगा सकते है। और हमें यह भी देखना चाहिए कि जहाँ पर चीन में कमियाँ हैं उनको आधार बना कर हम आगे बढ़ सकते हैं क्या? भारत को अपनी मानव पूंजी में निवेश जारी रखना चाहिए। जैसा कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा रिपोर्ट (GCR) में दिखाया गया है, लोगों में निवेश सामाजिक और आर्थिक दोनों परिणामों के लिए अच्छा है। स्वास्थ्य, शिक्षा और कौशल में निवेश दुनिया भर में उत्पादकता के प्रमुख चालकों में से है। भारत दुनियां के पांचवे युवा का घर है। 1.3 बिलियन की आधी आबादी 25 वर्ष से कम है, और एक चौथाई 14 वर्ष की आयु से कम है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत की युवा आबादी इसकी सबसे मूल्यवान संपत्ति है। जनसांख्यिकीय लाभांश एक दायित्व में बदल सकता है अगर भारत की आबादी स्वस्थ होती है और उसके युवा कौशल से लैस होते हैं लेकिन अगर हम किसी कारणवश अपनी आबादी का समुचित उपयोग नहीं कर पाते है तो यकीन मानिए यही आबादी देश के लिए भस्मासुर भी बन सकती है।

2020 तक, भारत 29 साल की औसत आयु के साथ दुनिया का सबसे युवा देश बनने की ओर अग्रसर है। 2030 तक, यह 962 मिलियन लोगों की दुनिया की सबसे बड़ी काम काजी आयु होगी। हालाँकि, भारत अभी स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता से जूझ रहा है। रिपोर्ट ने सरकार से मूलभूत शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने, सुधारात्मक उपायों का सुझाव देने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर के मूल्यांकन का संचालन करने और उच्च शिक्षा संस्थानों को अधिक स्वायत्तता देने के लिए कहा है। सरकार के विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों की देख-रेख के लिए एक स्वतंत्र प्राधिकरण की स्थापना का प्रस्ताव। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाले वर्षों में भारत के स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होगा। इसी तरह, वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम और ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन की हालिया रिपोर्ट बताती है कि भारत के युवा उच्च शिक्षा

और कौशल विकास को आगे बढ़ाने में रुचि रखते हैं, और कौशल अंतराल को पाटने में मदद करने के लिए निजी क्षेत्र को देख रहे हैं।

5. **गुणवत्ता, विक्रय और निर्यात केंद्रित उत्पाद :** भारत में कच्चे माल की और कृषि उत्पादों की कोई कमी नहीं है। अत: हमें ऐसे उत्पादनों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो विश्व बाजार में हाथों-हाथ बिक जाएँ। हमें सभी उत्पादों की गुणवत्ता को सर्वोपरि रखना चाहिए। इसका एक सटीक उदाहरण है जैसे कि चीन किसी भी वस्तु का भारी पैमाने पर उत्पादन करता है क्योंकि वे उत्पाद की कीमत कम रखते हैं और विश्व में उसका कोई प्रतिर्स्पधी भी नहीं है और उनके सामान की गुणवत्ता निम्न स्तर की होती है। ऐसा माना जाता है कि चीन के सामान की एक क्षण की भी गारंटी नहीं है। यानि उसके सामान की गुणवत्ता पर किसी को विश्वास नहीं है। लेकिन फिर भी ज्यादातर देश चीन में ही सामान बनवाते हैं। अगर भारत उन देशों को गुणवत्तापूर्वक उत्पादन दे तो सारे देश भारत में उत्पादन के लिए खुशी-खुशी आएंगे। लेकिन भारत को इसके के लिए अनुकूल वातावरण बनाना होगा।
6. **कृषि विकास और प्रबंधन :** भारत एक कृषि प्रधान देश है। और कृषि हमारे देश की रीढ ़है। इसलिए बागवानी, डेयरी, मुर्गीपालन, मछली पालन और वानिकी जैसी उच्च मूल्य वाली गतिविधियों के लिए नई तकनीकों का इस्तेमाल बहुत जरुरी है। कृषि उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ उसके प्रबंधन को प्रधानता देनी होगी। क्योंकि हम आये दिन किसानों को उचित मूल्य न मिलने के कारण अपनी ही फसलों को जलाते हुए, सड़क पर फैंकते हुए देखते हैं। यह हमारे लिए बड़े शर्म की बात है कि देश 70 साल की आजादी के बाद भी अपने किसानों की मेहनत का उचित फल नहीं दिला पा रहा है। हमें खेती उत्पादों को सीधे उपयोग करने के लिए तैयार खाद्य पदार्थ में नहीं बदल पा रहे है। हमें ऐसी व्यवस्था बनानी होगी जिससे कि हम वही फसल बोयें जिसकी वास्तव में जरुरत हो। जिसके दाम ज्यादा से ज्यादा मिलें। जिसको सीधे उपयोग करने के लिए तैयार खाद्य पदार्थ में बदला जा सके। जिसके रख-रखाव की कम से कम जरुरत हो। जिसके खराब होने के कम से कम अनुमान हों। हमें उन कृषि उत्पादों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए जो

विदेशों में निर्यात की जा सके। किसानों को तकनीकी आधार पर इतना सक्षम बनाया जाना चाहिए की वो इस सब बातों को समझ कर उन पर अमल भी कर सकें।

7. **नदियों का एकीकरण और पानी का समुचित प्रबंधनः** यह तो हम सभी अच्छे से जानते है कि बिन पानी सब सून। अगर अभी से पानी का सही प्रबंधन नहीं किया तो आने वाले समय में पानी की क्या कीमत होगी, यह पूरी दुनिया को पता चल जायेगा। भारत के पास बहुत सारी नदियाँ हैं। लेकिन दूसरी तरफ बहुत सारे राज्य हैं जहाँ पर रेगिस्तान हैं। पानी की भारी कमी है, कुछ इलाके तो पूरी तरह से वर्षा पर निर्भर रहते हैं। अतः भारत को अभी से नदियों के एकीकरण और पानी के प्रबंधन पर पूरा ध्यान केंद्रित करने की जरुरत होगी। हमें पानी सिर्फ पीने के लिए ही नहीं चाहिए बल्कि फसल की तीव्रता बढ़ाने, सिंचाई की पहुंच बढ़ाने, बीज प्रतिस्थापन दर बढ़ाने, उर्वरकों के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए और सिंचाई के दायरे का विस्तार करने की जरूरत है।
8. **क्षेत्रीय विकास एवं राज्यों का सहयोगः** भारत सरकार ने देश को चार प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया हैः उत्तर-पूर्व, तटीय क्षेत्र, हिमालयी राज्य और रेगिस्तान व सूखाग्रस्त क्षेत्र और इन क्षेत्रों के आर्थिक मजबूती और कमियों को ध्यान में रखते हुए यहाँ के उद्योग और व्यापारीकरण की नीतियाँ बनाई हैं। इसके अलावा केंद्र को राज्यों के प्रति उदारीकरण की नीति अपनानी होगी जिससे राज्यों को अर्थव्यवस्था में निर्णय लेने की प्रक्रिया में आसानी हो सके। इस तरह के उदारीकरण के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के स्तर पर नौकरशाही में सुधार और सुधार के लिए महत्वपूर्ण प्रयास की आवश्यकता होगी। राज्य को विकास का बाजार संचालित प्रतिमान के संदर्भ में भी मजबूत भूमिका निभाने में कोई संदेह नहीं होना चाहिए। कानूनी प्रणाली, नियामक प्रणाली और राज्य के निगरानी कार्यों को मजबूत करने और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।
9. **पर्यावरण ह्रास और जलवायु परिवर्तनः** आज पूरा विश्व पर्यावरण ह्रास से चिंतित है। और इसका सबसे बड़ा कारण है औद्योगीकरण। विश्व

के विकसित देशों ने औद्योगीक क्रांति से प्रदूषण को बड़ा दिया। और अब अविकसित एवं विकासशील देश जब औद्योगिक क्रांति कर रहे हैं तो विकसित देशों को वातावरण के पतन की चिंता हो रही है। इसी कारण से पूरा विश्व दो भागो में बंट गया है। लेकिन हम इस लड़ाई की वजह से पूरी मानव जाति को खतरे में नहीं डाल सकते। यह सार्वभौमिक सत्य है और सभी देशों को मिल कर वैश्विक वातावरण पतन का समाधान करना ही होगा। भारत में दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 10 हैं। इस समस्या को ठीक करने के लिए भारत सरकार ने सार्वजनिक परिवहन में तेजी लाने से लेकर पेट्रोल और डीजल इंजन से स्थानांतरण तक संपीड़ित प्राकृतिक गैस (CNG) और बाद में अगले दशक में इलेक्ट्रिक वाहनों तक उपायों का एक प्रस्ताव रखा है। उत्तरी भारत में फसल जलने से पैदा होने वाले वार्षिक धुँए से निपटने के लिए-जैसे कि किसान अवशेषों को जलाते हैं-उसने खुद बीज पर सब्सिडी देने का प्रस्ताव दिया है, एक मशीन जो अवशेषों का उपयोग करके फसल लगा सकती है।, इसके अलावा अन्य प्रदूषण-नियंत्रण के उपाय सुझाये हैं। स्वस्थ भारत के लिए जरूरी है स्वस्थ वातावरण और स्वस्थ कामगार। अत: भारत पूर्णरूप से इस विषय पर गंभीर है और इसके लिए समुचित कदम भी उठा रहा है।

10. **वैश्विक लुभावनी आर्थिक उदार शक्ति:** अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए जरूरी है कि भारत की छवि भी वैश्विक स्तर पर लुभावनी आर्थिक उदार शक्ति के तौर पर स्थापित हो। भारत सरकार फिलहाल खुद को एक क्षेत्रीय उदार शक्ति के रूप में पेश कर रही है। इस उद्देश्य के लिए भारत की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और रचनात्मक शक्ति उसके महत्वपूर्ण अविभाज्य अंग हैं जो विश्व को हमेशा से ही आकर्षित करते आये हैं। भारत के अपने पड़ोसियों के साथ मानवीय सम्बन्ध है और आपदा परिस्थितियों में भारत उनकी राहत प्रबंध और उचित सहायता करता रहता है। भारत को अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों के लिए और अधिक उदार नीतियों का पालन करना चाहिए और उनके सरल एवं सुगम व्यापारीकरण को और प्रोत्साहित करना चाहिए। लेकिन ये सब देश हित एवं देश के संसाधनों की कीमत पर कतई नहीं।

11. **अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक एव ंसामरिक कूटनीतिः** भारत को उदारीकरण के साथ-साथ अन्य सामान व्यापारिक विचार वाले देशों के साथ विकसित देशों से उचित मोल-भाव एवं समुचित सौदेबाजी करनी चाहिए। जैसेकि भारत को किसी भी बहुपक्षीय समझौते में प्रौद्योगिकी को स्थानांतरित करने, सूचना साझा करने और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए **विश्व व्यापार संघ (WTO)** और अन्य मंचों में आचार संहिता और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दायित्वों को शामिल करने के लिए दबाव डालना चाहिए।

आज भारत के सामने चीन सबसे बड़ी चुनौती के रूप में है और वह आने वाले समय का एक शक्तिशाली देश है। चाहें वह सामरिक, रणनीतिक, एवं आर्थिक चुनौती हो हमें उसका मुकाबला बड़े ही संयम से करना होगा। चीन एक साम्यवादी देश है और लोकतंत्र के लिए वहाँ पर कोई जगह नहीं है। चीन आर्थिक महाशक्ति बनने के साथ-2, वह एक सामरिक और सैनिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। दोनों देशों का भूमि विवाद जग जाहिर है। देश की सीमाओं पर आये दिन संघर्ष होता रहता है। भारत चीन का वर्तमान और भविष्य का प्रतिद्वन्द्वी है ऐसे में चीन भारत को उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति के रूप में कैसे स्वीकार कर सकता है। चीन अवश्य ही किसी न किसी विवाद अथवा युद्ध के माध्यम से भारत की प्रगति को बाधित करता रहेगा। भारत को उसकी इस चाल में न फंस कर अपनी आर्थिक प्रगति सुनिश्चित करनी होगी। अगर भारत को अपने विकास की गति को निरंतर रखना है तो चीन को अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति से साधना होगा। उसकी सभी कुटिल चालों को विफल करना होगा। अमेरिका एवं उसके सहयोगी देश भी कभी यह बर्दाश्त नहीं करेंगे कि भारत जैसे देश उनके सम्मुख आर्थिक महाशक्ति कहलायें। अतः भारत को आर्थिक महाशक्ति बनने के साथ ही सामरिक महाशक्ति भी बनना पड़ेगा। भारत को अपने दुश्मन और दोस्त दोनों देशों को दोबारा परखना होगा। अपने दुश्मन देशों से सावधान रहना होगा और किसी भी तरह के युद्ध/धरती के विवाद से दूर रहना होगा। देश की सुरक्षा, एकता एवं अखंडता के साथ समझौता न करते हुए, हथियारों की अति होड़ से दूर रहना होगा।

औद्योगिक क्रांति ने समीकरण में उत्पादकता को जोड़ा और अमेरिका को 1900 में दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना दिया। विनिर्माण, वित्त और प्रौद्योगिकी में नवविचारों ने इस स्थिति को वर्तमान में भी बनाए रखने मदद की। लेकिन वर्तमान परिस्थितियाँ बदल गयी हैं और अर्थव्यवस्था पुनः मानव बल आधारित हो गई है। भारत को उद्योगों में मानव बल के अनुकूल नीतियां बनानी होंगी। विदेशी निवेशक घरेलु उत्पादकों को उनकी अपनी स्वतन्त्रता से काम करने की सुविधा देनी होगी। भारत को अपने नियमों में कुछ लोचशीलता लाने की आवश्कता होगी। जैसे कि आने वाले कुछ वर्षों तक नये उद्योगों को मूलभूत सुविधाएँ प्रदान करना, उद्योगों के लिए तुरंत भूमि परिवर्तन या बिना परिवर्तन के भूमि के उपयोग की इजाजत देना, जहाँ चाह वहाँ व्यापार, छोटे नए कारोबारियों को सहयोग एवं अनुदान, सभी अपेक्षित आवेदन एवं अनुमोदन के लिए एकीकृत काउंटर। एक अनुरक्षण अधिकारी को अनुमोदन प्राप्त करने के लिए जिम्मेदारी देना। विभिन्न स्तरों पर नियमित निगरानी एवं समयबद्ध अनुमोदन, इत्यादि।

संदर्भ

1. IMF, (2019). https://www.imf.org/en/èAbout
2. CIA World Factbook, (2019).https://www.cia.gov/about-cia/todays-ciaAccessed onApril 04, 2019
3. Jeff Desjardins, (2019).www.visualcapitalist.com
4. *Ganguly, Sumit, (2011).* India Since 1980. *Cambridge University Press.*
5. World Economic Outlook (October 2018) Report for Selected Countries and Subjects. *International Monetary Fund (IMF)*. Retrieved 18 November 2018.https://www.imf.org/external/pubsft/weo/2018/02/weodata weorept.aspx? pr.x=k87 &pr.y=k 17&sy =k2013&ey=k2023& scsm=k1& ssd=k1&sort=kco untry &ds=k. &br=k1&c=k924% 2C534&s=kNGDP_ RPCH&grp=k0&a=k
6. CIA World Factbook, (2019).https://www.cia.gov/library/ publications/resources/the-world-factbook/geos/in.html
7. Emily Schneider, (11 June 2015). The SouthAsia Channel: India TopsWorld Bank's Growth Outlook for First Time; BombAttack onAfghanNewsAgency; Deadly Week for iQuetta PoliceForce.https:// foreignpolicy. com/2015/ 06/11/india-tops-world-banks-growth-outlook-for-first-time-bomb-attack-on-afghan-news-agency-deadly-week-for-quetta-police-force
8. Bhargava,Yuthika, (2016).India has second fastest growing services sector. Updated: August 05, 2016 https://www.thehindu.com/business/budget/india-has-second-fastest-growing-services-sectorèarticle6193500.ece
9. NASSCOM, (2017). IT-BPM Industry in India: Sustaining Growth and

Investing for the Future. 22 June 2017, Hyderabad https://www.nasscom.in/sites/default/files/NASSCOM_ Annual_ Guidance_ Final_22062017.pdf

10. *Menezes, Beryl, (2015).*Indian IT services exports seen growing 12-14% in year ahead. *LiveMint.com*. *10 February 2015* Retrieved 2 November 2017. https://www.livemint.com/Industry/bCLOgyaLGiIi6TuhmN0S7J/Indian-IT-services-exports-seen-growing-1214-in-year-ahead.html
11. Press Trust of India, (*2015).* India 4th largest start-up hub in world: Eco survey". Retrieved 12April 2019 – *via Business Standard*. https: www.business-standard.com/articleèpti-stories/india-4th-largest-start-up-hub-in-world-eco-survey-115022700394_1.html
12. India Brand Equity Foundation, (2018). Retail Industry in India, December, 2018.https://www.ibef.org/industryèretail-india.aspx
13. PricewaterhouseCoopers, (2017). The World in 2050 – Summary report: The Long View How will the global economic order change by 2050? Feb, 2017. Pg 12

❐❐❐